भारत सरकार

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या: 1243

06 फरवरी, 2026 को उत्तर देने के लिए

संक्रामक रोग

†1243. श्री धैर्यशील संभाजीराव माणे:

क्या **स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार के पास भारत की स्वास्थ्य प्रणाली को संक्रामक रोगों पर मुख्य रूप से केंद्रित व्यवस्था से उन्नत एवं वैयक्तिकृत चिकित्सा, जिसमें जीनोमिक्स, प्रिसीजन डायग्नोस्टिक्स तथा लक्षित उपचार शामिल हैं, की ओर संक्रमण के लिए उपायों को समर्थन देने का कोई प्रस्ताव है, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) गत तीन वर्षों के दौरान उक्त संक्रमण से संबंधित प्रमुख कार्यक्रमों, अनुसंधान पहलों तथा सम्मिलित संस्थानों का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या वैयक्तिकृत चिकित्सा को समर्थन देने हेतु, विशेषकर सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों में, पर्याप्त अवसंरचना, कुशल मानव संसाधन तथा नियामक ढांचा उपलब्ध है, यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(घ) आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों तथा ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों के रोगियों के लिए ऐसी उन्नत स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियों तक समान पहुंच एवं वहनीयता सुनिश्चित करने के लिए सरकार किस प्रकार प्रस्ताव करती है; और

(ङ) संक्रामक एवं संचारी रोगों पर प्रभावी नियंत्रण जारी रखते हुए, वैयक्तिकृत चिकित्सा को मौजूदा राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के साथ एकीकृत करने हेतु सरकार द्वारा उठाए गए या उठाए जाने वाले कदमों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) से (ङ): भारत सरकार ने जीनोमिक्स, सटीक निदान और लक्षित उपचारों सहित उन्नत, वैयक्तिकृत चिकित्सा पर विभिन्न पहलें की हैं।

केंद्र सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा वित्त पोषित 'जीनोम इंडिया' ने देश भर में सभी प्रमुख जनसंख्या समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले 10,000 से अधिक व्यक्तियों के संपूर्ण जीनोम अनुक्रमण (डब्ल्यूजीएस) डेटाबेस को पूरा कर लिया है। जीनोम इंडिया डेटा वैज्ञानिक जांच के लिए भारत सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करता है और इस राष्ट्रीय आनुवंशिक संसाधन ज्ञान को सभी तक पहुंचाकर और प्रसार के माध्यम से सतत विकास को बढ़ावा देते हुए भारत और उसके बाहर स्वास्थ्य और विज्ञान को नया आकार देने के लिए तैयार है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने नई दिल्ली में सीएसआईआर- जिनोमिकी और समवेत जीव विज्ञान संस्थान (आईजीआईबी) में अत्याधुनिक फेनोम इंडिया 'नेशनल बायोबैंक' भी लॉन्च किया है। इस बायोबैंक का उद्देश्य देश भर में 10 हजार व्यक्तियों से व्यापक जीनोमिक, जीवन शैली और नैदानिक डेटा एकत्र करके देशव्यापी कोहोर्ट स्टडी की रीढ़ बनना है।

जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने सूचित किया है कि बायोई3 नीति के अंतर्गत उसने विषयगत क्षेत्रों में से एक के रूप में प्रेसिजन बायोथेरेप्यूटिक्स की पहचान की है। इस विषयगत क्षेत्र के तहत, डीबीटी बेहतर स्वास्थ्य परिणामों के लिए लागत प्रभावी समाधान के रूप में उद्योग और शिक्षाविदों द्वारा अनुसंधान एवं विकास, और स्वदेशी एमआरएनए थेरेपी, मोनोक्लोनल एंटीबॉडी और सेल एवं जीन थेरेपी के निर्माण की सुविधा प्रदान करता है। यह सहायता खोज और अनुप्रयोग उन्मुख अनुसंधान को कवर करता है ताकि बड़े पैमाने पर अंतर को पाटा जा सके।

जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा दी गई सूचना के अनुसार, देश में आनुवांशिक विकारों के बोझ को दूर करने के लिए उनके द्वारा वंशागत विकारों के प्रबंधन के लिए अद्वितीय विधियां (UMMID) पहल शुरू की गई थी। UMMID पहल के घटकों में से एक नैदानिक देखभाल प्रदान करने के लिए निदान केंद्रों (राष्ट्रीय वंशागत विकार प्रशासन केंद्र) की स्थापना करना है, जिसमें व्यापक रूप से आनुवांशिक विकारों के लिए प्रसवपूर्व परीक्षण, अपेक्षाकृत सामान्य उपचार योग्य आनुवंशिक चयापचय विकारों के लिए नवजात जांच और आनुवंशिक विकार के उच्च जोखिम भ्रूण वाली गर्भवती माताओं की आनुवंशिक परामर्श शामिल है।

इसके अलावा, डीबीटी यह भारतीय क्षय रोग जीनोमिक निगरानी कंसोटियम कार्यक्रम (आईएनटीजीएस) को सहायता प्रदान करता है जिसका उद्देश्य माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस में मौजूदा और उभरते हुए औषध प्रतिरोध उत्परिवर्तनों को सूचीबद्ध करना है। इस पहल का उद्देश्य औषधि प्रतिरोध का तेजी से और अधिक व्यापक पता लगाने के लिए जीनोमिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का लाभ उठाना और अधिक प्रभावी टीबी नियंत्रण और प्रबंधन के लिए साक्ष्य-आधारित रणनीतियों का समर्थन करना है।

औषध विभाग प्रारंभिक अनुसंधान से लेकर उत्पाद विकास और व्यावसायीकरण तक नवाचार जीवनचक्र में परियोजनाओं का समर्थन करके अनुसंधान और नवाचार को सुदृढ़ करने के लिए फार्मा-मेडटेक क्षेत्र (पीआरआईपी) में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए योजना लागू करता है। पीआरआईपी योजना नई दवाओं; जटिल जेनेरिक और बायोसिमिलर; और पहचाने गए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में नए चिकित्सा उपकरणों के विकास या त्वरित सत्यापन के लिए पात्र अनुसंधान एवं विकास परियोजनाओं के लिए उद्योगों, एमएसएमई, स्टार्ट-अप को वित्तीय सहायता के वितरण का प्रावधान करती है; जिन्हें या तो इन-हाउस या शिक्षाविदों के सहयोग से किया जाता है।

स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर) ने गरीब और जरूरतमंद फेफड़े और स्तन कैंसर रोगियों को मुफ्त में उन्नत आणविक ऑन्कोपैथोलॉजी नैदानिक सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से डीएचआर-आईसीएमआर एडवांस्ड मॉलिक्यूलर ऑन्कोलॉजी डायग्नोस्टिक सर्विसेज (DIAMOnDS) योजना कार्यान्वित की है। देश भर में 25 केंद्रों के अपने नेटवर्क के माध्यम से, इस योजना का उद्देश्य कैंसर रोगियों को बायोमार्कर आधारित सटीकता और व्यक्तिगत उपचार की सुविधा प्रदान करना है। इसके अलावा, भारत में अपने स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी मूल्यांकन (एचटीएआईएन) संबद्ध कार्यालय के माध्यम से, डीएचआर वहनीय उन्नत प्रौद्योगिकी

और राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों में उनके एकीकरण के लिए लागत प्रभावी अध्ययन का समर्थन करता है।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के माध्यम से डीएचआर रोगी-विशिष्ट और लक्षित उपचारों सहित नए निदान, दवाओं, जीवविज्ञान और चिकित्सा उपकरणों को अवधारणा के प्रमाण से उत्पाद विकास में बदलने के लिए उच्च-जोखिम, उच्च-लाभ अनुसंधान एवं विकास का समर्थन करके स्वदेशी नवाचार को बढ़ावा देता है। इसे सटीक डिजाइन, निर्माण, परीक्षण और सत्यापन के लिए आईआईटी दिल्ली में mPRAGATI जैसी राष्ट्रीय सुविधाओं से सहयोग मिलता है।

इसके अलावा, डीएचआर अपनी मानव संसाधन विकास (एचआरडी) योजना के माध्यम से वैयक्तिकृत चिकित्सा और उन्नत प्रौद्योगिकियों सहित स्वास्थ्य अनुसंधान में क्षमता निर्माण में सहायता करता है। आईसीएमआर मेडटेक मित्र, पेटेंट मित्र और क्लिनिकल ट्रायल नेटवर्क - इंटेंट जैसी अपनी अग्रणी पहलों के माध्यम से क्रमशः नियामक हैंडहोल्डिंग और नैदानिक परीक्षणों का समर्थन करता है। यह सहायता प्रणाली लोगों के स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए उपयोगी उत्पादों और उपकरणों के त्वरित ट्रांसलेट करने में सहायता कर रही है।

आईसीएमआर ने जैव चिकित्सा अनुसंधान, बायोबैंकिंग, जीनोमिक डेटा उपयोग और नैदानिक नमूनों के द्वितीयक विश्लेषण को नियंत्रित करने वाले राष्ट्रीय नैतिक दिशानिर्देश जारी करके और जीन थेरेपी उत्पाद विकास और निरीक्षण के लिए राष्ट्रीय दिशानिर्देशों को सह-विकसित करके, उन्नत और लक्षित उपचारों के लिए एक सुविधाजनक मार्ग प्रदान करके उन्नत जैव चिकित्सा प्रौद्योगिकियों पर नैतिक अनुसंधान के लिए भारत में अनुकूल वातावरण को आकार देने में केंद्रीय भूमिका निभाई है।

*****